Poverty
गरीबी (निर्धनता)

Dr. Amrit Lal Chandrabhash,
Political Science, Government Lal Chakradhar Shah Late. College Ambagarh Chowki

डॉ अमृत लाल चंद्रभाष
(सहायक प्राध्यापक राजनीति विज्ञान)
शोधार्थी :– राजनीति विज्ञान विभाग
शासकीय लाल चक्रधर शाह स्ना. महाविद्यालय अम्बागढ़ चौकी
Email :- alchandrabhas888@gmail.com

प्रस्तावना

किसी भी समाज में गरीबी एक गंभीर समस्या है, मानव इतिहास के प्रारंभ से ही गरीबी विद्यमान रही है। जैसे–जैसे समय व्यतीत होते गया और जनसंख्या विस्फोटक रूप से बढ़ने लगा, गरीबी वृहद पैमाने पर दिखने लगा। गरीबी से निराशावाद जन्म लेता है, और विभिन्न सामाजिक आर्थिक समस्या को जन्म देता है। गरीबी किसी भी देश के लिये चिन्ता जनक है, दाण्डेकर एवं रथ के अनुसार '' भारत में गरीबी की समस्या निम्न राष्ट्रीय आय तथा इसके असमान वितरण की मन्द गति तथा विकास के छोटे लाभों का असमान वितरण है।'' ग्रामीण गरीब जनता उन अधिकांश सुविधाओं से वंचित है, जिन्हें जीवन के मापदण्डों के अनुसार न्युनतम आवश्यक समझा जाता है। गरीब लोग अपनी भाग्यवादी प्रवृत्ति के बोझ से हमेशा दबा हुआ होता है। पूर्व जन्म के पाप के फल समझकर गरीबी के साथ जीना सीख लिया है। स्वतंत्रता के बाद भारत में आर्थिक प्रगति हुई है। लेकिन गरीबी निवरण में अपेक्षित परिवर्तन नहीं दिख रहा है। गरीबी अभी भी देश के लिये गंभीर समस्या है।

अर्थ एवं अभिप्राय :–

गरीबी का अर्थ उस सामाजिक क्रिया से है, जिसमें समाज का एक हिस्सा अपने जीन की बुनियादी आवश्यकताओं को भी पूरा नही कर पाता और न्युनतम जीवन स्तर निर्वाह करने से वंचित रहता है। दूसरे शब्दों में, गरीबी का अभिप्राय जीवन, स्वास्थ तथा कार्यकुशलता के लिये न्युनतम उपभोग आवश्यकाओं की प्राप्ति की अयोग्यता से है। सामान्यतः गरीबी का आशय लोगों के निम्न जीवन निर्वाह स्तर से लगाया जाता है। जीवन निर्वाह की न्युनतम आवश्यकताओं के पूरा न होने से व्यक्ति का जीवन कष्टमय हो जाता है। उसके स्वास्थ्य तथा कार्यकुशलता की हानि होती है, जिससे उत्पादन में वृद्धि करना तथा भविष्य में निर्धनता से छुटकारा पाना कठिन हो जाता है। परिणामतः व्यक्ति गरीबी के दलदल में फंस जाता है। कोई देश इसलिये गरीब बना रहता है, क्योंकि वह गरीब है। एक गरीब आदमी को उसके गरीबी के कारण भरपेट व संतुलित भोजन नहीं मिल पाता इस कारण उसका स्वास्थ्य कमजोर रहता है, उसे काम करने की क्षमता कम हो जाती है, इस कारण से आमदनी भी कम हो जाती है, और वह गरीब बना रहता है। इस लिये वह गरीबी का दुष्चक्र में दबा रहता है। एक व्यक्ति गरीब है, इसलिये वह विकास नही कर सकता, यदि व्यक्ति का विकास अवरूद्ध होता है, तो राष्ट्र का विकास अवरूद्ध हो जाता है, और देश गरीब बना रहता है। तीसरी दुनिया के देशों की यही समस्या है, गरीबी एक गंभीर चुनौती है।

राग्नार नर्क्स 1967 में अपनी प्रसिद्ध पुस्तक ''अविकसित देशों में पूंजी निर्माण की समस्याएं'' में ''गरीबी के दुष्चक्र'' नामक मॉडल दिया।

जॉन केनेथ गेलबर्थ के अनुसार

1. लोग इस लिये गरीब हैं क्योंकि उन्हें गरीब रहना पसंद है।
2. दरिद्र देश प्राकृतिक रूप से ही दरिद्र हैं।
3. कोई देश इस लिये गरीब है क्योंकि वह औपनिवेशिक उत्पीड़न का शिकार रहा है।
4. गरीब वर्ग शोषण का परिणाम है
5. गरीबी का कारण अपर्याप्त पूंजी है।
6. अत्यधिक जनसंख्या गरीबी का कारण है।

गरीबी का दुष्चक्र यह दर्शाता है कि गरीब ही गरीब का कारण है। एक गरीब व्यकित अपने मौजूदा कर्ज को चुकाने के लिये कुछ ज्यादा और उधार लेता है, जिससे उसके कर्ज और बढ़ जाता है इससें उसको

ब्याज भी देना पड़ता है, इससे उसका कुल कर्ज और बढ़ जायेगा, और यह पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ता चला जाता है, जो गरीबी के जाल में फंसे रहते है।

शोध प्रविधि :– इस शोध पत्र के लिये शोध सामग्री अधिकांश रूप से द्वितीयक स्रोतों से ग्रहण की गयी है। इसमें ऐतिहासिक विश्लेशण व वर्णात्मक दृष्टिकोण के साथ–साथ शोधकर्ता ने अपने व्यक्तिगत अनुभवों को भी स्थान दिया है। शोध सामग्री प्रसिद्ध पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं व समाचार पत्रों से प्राप्त की गई है।

शोध का उद्देश्य :–

1. गरीबी के कारण का पता लगाना।
2. गरीबी के कारणें का निवारण करना।
3. गरीबी के प्रकारों का विश्लेषण करना।
4. गरीबी से होने वाले दुष्परिणामों की विश्लेषण करना।
5. गरीबी से होने वाले अपराधों की विश्लेषण करना।

गरीबी के कारण :–

1.शिक्षा का अभाव :– शिक्षा जीवन का महत्व पूर्ण हिस्सा है, जिसके अभाव में व्यक्ति की सोंचने समझने की क्षमता का विकास नहीं हो पाता। इस कारण से वह कोई कार्य करने में रूचि नहीं लेता।

2.आर्थिक असमानता :– जब देश धन एवं संसाधन का वितरण असमान रूप से हो तो जिसके पास धन एवं संसाधन पर्याप्त मात्रा में रहेगा वह अमीर व्यक्ति कहलायेगा, और जिसके पास धन एवं संसाधन नहीं के बराबर रहेगा वह गरीब व्यक्ति माना जायेगा।

3.स्वास्थ्य सेवाओं की कमी :– व्यक्ति का स्वास्थ्य ठीक नहीं है, इस कारण से उसके अंदर कार्य करने की क्षमता कम हो जायेगी, और वह अपने आवश्यकाओं की पूर्ति करने के लिये दूसरों पर निर्भर हो जाता है। इस कारण से वह गरीब बन जाता है।

4.अत्यधिक जनसंख्या :– जनसंख्या द्रुत गति से बढ़ रहा है जिसका गरीबी को गंभीर रूप देने में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। प्राकृतिक संसाधन कम और दोहन करने वाले लोग अधिक होंगे संसाधनों पर बोझ अधिक पड़ने के कारण सभी लोगों की आवश्यकाओं की पूर्ति नहीं हो सकती इस कारण से गरीबी बढ़ती है।

5.भ्रष्ट शासन :– शासन का स्वरूप पर भी निर्भर करता है, कि उस राज्य में गरीब है या गरीबी का निवारण हो चुका है। कोई भी शासन यदि लोक कल्याण में वृद्धि को लेकर की जाती है, तो वहां रहने वाले जनता में समृद्धि बढ़ती है। सरकार यदि भ्रष्टाचार पर उतर आये तो लोगों का शोषण होने लगेगा और गरीबी बढ़ेगी।

6.संघर्ष :– युद्ध या अन्य किसी प्रकार का संघर्ष किसी समाज में होता है, तो वह मानव समाज अपनी समस्त उत्पादन क्षमता को खो देता है, और सभी समय संघर्ष में व्यतीत करता है इस कारण से गरीब हो जाता है।

7.ऋण :– ऋण ग्रस्तता से भी लोगों के ऊपर कर्ज का बोझ बढ़ता चला जाता है, जिससे उसकी आय की बहुत बड़ हिस्सा ऋण चुकाने में निकल जाता है, और उसके पास कछु बचता भी नहीं।

8.कम कृषि उत्पादन :– देश के अधिकांश जन संख्या कृषि कार्य में संलिप्त रहते है। जिस क्षेत्र का जमीन अत्यधिक ऊपज देने वाले होते है, वहां रहने वाले लोगों की जीवन स्तर उच्च होता है। कम उत्पादन करने वाले किसानों की स्थिति बहुत निम्न होता है।

9.बेरोजगारी :– बेरोजगारी देश का सबसे बड़ा मुद्दा रहा है। कृषि अधारित जीवन में चार माह काम और आठ माह खाली रहना होता इसलिये लोग बेरोजगार रहते है, लोगों के हाथ में काम नहीं रहेगा, तो आमदनी कहां होगी।

10..प्राकृतिक आपदा :– पर्यावरणीय परिस्थितियां, जैसे प्राकृतिक आपदाएं, सूखा, अनावृष्टि, अतिवृष्टि, बाढ़, महामारी आदि।

11. अकर्मण्यता :– आदमी का आलसी पन होना भी गरीबी का कारण होता है। आदमी कुछ करना ही नहीं चाहता और सब चीज उसे मुप्त में मिल जायें।

12. मादक द्रव्य व्यसन :– लोग जिसके इस्तेमाल से परहेज करना चाहिये उसे रोज करते है। दारू, अफिम, भांग, गांजा, जुआ, पर स्त्री गमन करना, आदि

13. शारीरिक अक्षमता :– कभी–कभी लोगों का शारीरिक अक्षमता जन्म से या बाद में आ जाने के कारण काम करने के लायक नहीं रह सकता इस लिये अनउत्पादक बन के रह जाते है।

14.राष्ट्रीय उत्पादन का निम्न स्तर :– भारत का कुल राष्ट्रीय उत्पादन जनसंख्या की तुलना में काफी कम है। इस कारण प्रति व्यक्ति आय भी कम है।

15. मुद्र स्फीतिक दबाव :– उत्पादन का नीची दर तथा जनसंख्या की ऊंची दर के कारण अल्पविकसित अर्थव्यवस्था मुद्रा स्फीतिक दबाव के जाल में फंस जाता है। कीमतों में निरंतर वृद्धि की स्थिति कम आय वालों को बुरी तरह से प्रभावित करती है। अतः गरीब और गरीब होते चले जाते हैं।

16. योग्य एवं निपुण उद्यमकर्ताओं का अभाव :– किसी भी देश में औद्योगिक विकास की प्रारंभिक अवस्था में साहस और कल्पना शक्ति रखने वाले, जोखिम उठाने वाले अपने कार्य में दक्ष, निपुण एवं चतुर उद्यमकर्ताओं की आवश्यकता होती है, किन्तु दुर्भाग्यवश ऐसे लोगों का आभाव रहा है।

17. पुरानी रूढ़ सामाजिक व्यवस्थाएं :– किसी देश के विकास के पैमान उस देश की सामाजिक व्यवस्था होती है। पुरानी एवं रूढ़ सामाजिक व्यवस्था विकास के मार्ग में अवरोधक है, जाति प्रथा, संयुक्त परिवार प्रथा आदि गरीबी के कारण है।

18 आधारिक संरचना का अभाव :– आर्थिक विकास की प्रमुख घटक ऊर्जा, यातायात तथा संचार का साधन, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा, निवास आदि बहुत ही बुरी अवस्था में है।

गरीबी के प्रकार :– गरीबी दो प्रकार के होते हैं।

सापेक्ष गरीबी :– सापेक्ष गरीबी का अभिप्राय विभिन्न वर्गों, प्रदेशों या दूसरें देशों की तुलना में पायी जाने वाली गरीबी से है। जिस देश या वर्ग के लोगों का जीवन निर्वाह स्तर नीचा होता है, वे उच्च निर्वहन स्तर के लोगों या देश की तुलना में या सापेक्ष रूप से गरीब माने जाते है। यु.एन.ओ. की रिपोर्ट के अनुसार उन देशों सापेक्ष रूप से निर्भर माना जाता है जिनकी प्रति व्यक्ति कुल आय 1 डालर प्रतिदिन से कम है। भारत की प्रति व्यक्ति आय 330 डालर प्रति वर्ष के लगभग है। अमरीका, जापान और

स्वीटजरलैण्ड ही नहीं बल्कि मिश्र, श्रीलंका, पाकिस्तान की प्रति व्यक्ति आय भी भारत की प्रति व्यक्ति आय से अधिक है। इसलिये भारत का निर्धन देशों से भी नीचा स्थान है।

निरपेक्ष गरीबी :– निरपेक्ष दृष्टि से उन लोगों को गरीब कहा जाता है जिनकी जीवन निर्वाह स्तर इतना नीचा होता है। कि जीवन की न्युनतम आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं हो पाती। इन आवश्यकाओं को शारीरिक विकास के लिये जरूरी न्युनतम पोषक आहार के रूप में व्यक्त किया जाता है। गरीब लागों की पहचान के लिये भारत में इसी माप दण्ड को अपनाया गया है। इस संदर्भ में योजना आयोग द्वारा प्रतिदिन के हिसाब से आव यक आहार की न्युनतम मात्रा ग्रामीण क्षेत्रों के लिये 2400 कैलोरी और शहरी क्षेत्रों के लिये 2100 कैलोरी निर्धारित की गई है।

गरीबी रेखा का निर्धारण :– गरीबी रेखा का निर्धारण एवं विभाजक रेखा जो जनसंख्या को दो भागों में विभाजित करता है, ऐसे लोग जो गरीब है तथा ऐसे लोग जो गरीब नहीं है। भारत में इसकी परिभाषा लोगों की न्युनतम उपभोग आवश्यकताओं को ध्यान में रख कर की जाती है। इसके अनुसार वे लोग ही गरीब माने जाते है जो एक निश्चित न्युनतम अनुपात में उपभोग का स्तर प्राप्त करने में असक्षम है। गरीबी रेख वह रेखा जो उस प्रति व्यक्ति औसत मासिक व्यय को प्रकट करती है। 1999–2000 की कीमतों पर 328 रूपये ग्रामीण क्षेत्र पर 459 रूप्ये शहरी क्षेत्र में प्रति माह उपभोग गरीबी रेखा माना जाता है। जिन लोगों में प्रति माह इससे कम है उन्हें भी गरीब माना जाता है। योजना आयोग ने गरीबी रेखा की परिभाषा आहार संबंधी जरूरतों को ध्यान में रख कर किया है। ग्रामीण क्षेत्र में एक व्यक्ति के प्रतिदिन के भोजन में 2400 कैलोरी तथा भाहरी क्षेत्र में एक व्यक्ति प्रतिदिन भोजन में 2100 कैलोरी होनी चाहिये।

योजना आयोग ने देश में निर्धनता के माप के लिये 1989 में प्रो. डी.टी.लकड़वाल की अध्यक्षता में एक विशेषज्ञ दल का गठन किया जिसने 1993 में अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की। इस आयोग ने प्रत्येक राज्य में मूल्य स्तर पर अलग अलग निर्धनता रेखा का निर्धारण किया। इसका अभिप्राय यह है कि प्रत्येक राज्य में निर्धनता रेखा भिन्न–भिन्न होगी।

1.ग्रामीण क्षेत्र में निर्धनता रेखा :– लकड़वाल समिति के आधार पर कृषि श्रमिकों के लिये उपभेक्ता मुल्य सूचकांक का सुझाव दिया ।

2. शहरी क्षेत्र में निर्धनता रेखा :– लकड़वाल समिति ने औद्योगिक श्रमिकों के लिये उपभेक्ता मूल्य सूचकांक और शहरी भिन्न कर्मचारियों के लिये उपभोक्ता मूल्य सूचकांक का सुझाव दिया ।

गरीबी रेखा निर्धारण की कार्यविधि :–

भारत में गरीबी रेखा निर्धारण के लिये उपभोग की सीमा को आधार बनाया जाता है।

1.उपभोग की सीमा का अनुमान लगाते समय, सार्वजनिक व्यय अथवा उपभोक्ता वस्तुओं पर सरकार द्वारा किये जाने वाले व्यय को शामिल नहीं किया जाता । केवल निजी उपभोग व्यय को ही ध्यान में रखा जाता है।

2.निजी उपभोग व्यय घटकों के रूप में न केवल खाद्य पदार्थ मदों को बल्कि गैर खाद्य पदार्थों को ध्यान में रखा जाता है।

3.खाद्य पदार्थ मदों के उपभोग के लिये कैलोरी के प्रति व्यक्ति उपभोग का अनुमान किया जाता है। आवृत्ति के बंटवारे को उस विभिन्न वर्ग अंतराल के साथ ग्रहण किया जाता है, जो कैलोरी उपभोग की सीमा तथा कैलोरी उपभोग के स्तर को प्रकट करती है।

4.अंततः व्यक्ति गणना अनुपात निकाला जाता है। जो निर्धन तथा अनिर्धन को (निर्धनता रेखा से संबंधित) ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्रों के लिये अलग से दर्शाता है। यह अनुपात निर्धनता रेखा से नीचे की जनसंख्या

के प्रतिशत को प्रकट करता है। गरीबी रेखा के निर्धारण तथा गरीबी के अनुमान के संदर्भ में सामान्यतः योजना आयोग के माप तथा दृष्टिकोण को स्वीकार किया जाता है। किन्तु विश्व बैंक आय के आधार पर गरीबी रेखा का निर्धारण करता है जिसे डॉलर गरीबी रेखा कहा जाता है। विश्व बैंक 1 डॉलर या 2 डॉलर न्युनतम आय के आधार पर गरीबी रेखा निर्धारित करता है। विश्व बैंक के रिपोर्ट के अनुसार विश्व में निर्धन लोगों की संख्या भारत में है। विश्व की 1.3 अरब निर्धन जन संख्या का सर्वाधिक 36 प्रतिशत भाग भारत में निवास करता है।

भारत में गरीबी का आंकड़ा

वर्श	गरीबों की संख्या करोड़ में	कुल जनसंख्या में गरीबों का प्रतिशत
1960–1961	17 करोड़	34%
1964–1965	22 करोड़	46%
1970–1971	25 करोड़	45%
1973–1974	32 करोड़	46%
1979–1980	33 करेड़	48%
1986–1887	27 करोड़	34%
1987–1988	31 करोड़	39.3%
1993–1994	32 करोड़	36%
1996–1997	27 करोड़	29%
2000–2001	26 करोड़	26%

भारत में विभिन्न राज्यों में गरीबों की संख्या अलग–अलग है। तमिलनाडू, उत्तर प्रदेश, बिहार, उड़ीसा तथा मध्य प्रदेश में निर्धनों की संख्या सबसे अधिक है। उत्तर प्रदेश की 41%, बिहार 55%, उड़ीसा की 49%, मध्य प्रदेश की 42%, पंजाब में 12%, हरियाणा में 25%, हिमांचल प्रदेश 27% आदि।

ग्रामीण और शहरी गरीबी का आंकड़ा

वर्श	ग्रामीण गरीबी		शहरी क्षेत्र	
	करोड़ में	प्रतिशत	करोड़ में	प्रतिशत
1973–74	26.1	56.4	6.0	49.0
1977–78	26.4	53.1	6.5	45.2
1983–84	25.2	45.7	7.1	40.8
1987–88	23.2	39.1	7.5	38.2
1993–94	24.4	37.3	7.6	32.4
1999–2000	19.3	27.1	6.7	23.6
2001	17.0	21.1	4.9	15.1

गरीबी दूर करने का उपाय :– भारत के लिये गरीबी एक गंभीर समस्या है। यहां लाखों करोड़ों लोग गरीब है, जिनका जीवन यापन संघर्ष पूर्ण वे अपने जीवन के मूल आवश्यकाओं को प्राप्त करने में असमर्थ हैं। गरीबी को दूर करने के लिये निम्न उपाय किये जा सकते है।

1. आर्थिक विकास की गति को बढ़ावा देना।
2. आय की असमानता को दूर करना।
3. जन संख्या की वृद्धि दर का कम करना।
4. अन्य उपाय।

आर्थिक विकास की गति को बढ़ावा देना :– भारत गरीबी की समस्या को दूर करने के लिये विकास की गति को तेज करना एक मूलभूत उपाय हो सकता है। विकास की गति तेज होने पर देश की आर्थिक समृद्धि बढ़ेगी, लोगों को रोजगार मिलेगा। रोजगार वृद्धि से ही गरीबी कम हो सकती है।

आय की असमानता को कम करना :– आय का समान वितरण करना आश्यक है। पूंजी के केन्द्रीकरण को रोकन उतना ही जरूरी है जितना शोषड़ विहिन समाज बन सके। गरीबों को रियायती दामों में रोजगार परक समान देकर सरकार मदद कर सकती है। मजदूरो के लिये न्युनतम मजदूरी निर्धारण कर शोषड़कारी मनसिकता को रोका जा सकता है। गरीब परिवार को निशुल्क शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधा मुहैया कराके गरीबी दूर कर सकते है।

जनसंख्या वृद्धि दर में कमी :– गरीबी दूर करने के लिये जनसंख्या की वृद्धि दर को रोक लगाना अतिआवश्यक है। जन संख्या वृद्धि से राष्ट्रीय आय वृद्धि बाधित होने लगता है। विशेषकर जन्म दर गरीब परिवारों में अधिक होता है। जिसके कारण गरीब परिवारों की आर्थिक विकास संभव नहीं हो पाता है। जनसंख्या कम करने के लिये विभिन्न उपाय निःशुल्क एवं सस्ते दरों में किया जाना चाहिये।

कृषि के क्षेत्र :– कृषि के क्षेत्र में गरीबी दूर करने के लिये कृषि विकास को विशेष सुविधाएं प्रदान करना चाहिये। इसके लिये कुषि का आधुनिकी करण करना जरूरी है। उन्नत बीज, खाद, सिंचाई उपकरण आदि उचित दर पर किसानों को प्रदान करना चाहिये।

बेरोजगारी दूर करना :– यदि गरीबी को दूर करना है, तो बेरोजगारी उन्मूलन के लिये विशेष उपाय करने होंगे। ग्रामीण कुटीर उद्योग को बढावा देना चाहिये।

न्युनतम आवश्यकताओं की पूर्ति करना :– शासन द्वारा गरीबों के लिये उनकी अति आवश्यक जरूरतों को पूरा करना चाहिये। जैसे– बिजली, पानी, शिक्षा, स्वास्थ्य, रेटी कपड़ा और मकान आदि ।

पिछड़े हुये क्षेत्रों पर विशेष निगरानी करना :– भारत के कुछ क्षेत्र अति पिछड़ा हुआ है। शासन इन पिछड़े हुये इलाकों के विकास पर जोर देना चाहिये।

स्वरोजगार के साधन उपलब्ध कराके :– आज के समय में स्वरोजगार के साधन को बढ़ावा देना चाहिये। कम दरों में ऋण उपलब्ध कराया जाना चाहिये। कृषि आधारित व्यवसाय को स्थापित करने में शासन सहयोग एवं सुविधाएं प्रदान करे।

संदर्भग्रथ :–

1. इकोनोमिक डिस्कसन।
2. विकीपिडिया।
3. घ्येय आईएएस एकेडेमी।
4. दृष्टि आईएएस एकेडमी

5. नेशनल पोर्टल ऑफ इण्डिया।
6. आउटरीच इंटरनेशनल आर्ग्रेनाजेशन।
7. कम्पैशन इंटरनेशनल।
8. रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया रिपोर्ट।
9. नीति आयोग टास्कफोर्स रिपोर्ट।
10. युनाटेड नेशन डेवलपमेण्ट प्रोग्राम।